।। सोई खुदा सोई ब्रह्म ।।

प्रणामी धर्म (निजानंद) की अनमोल भेंट

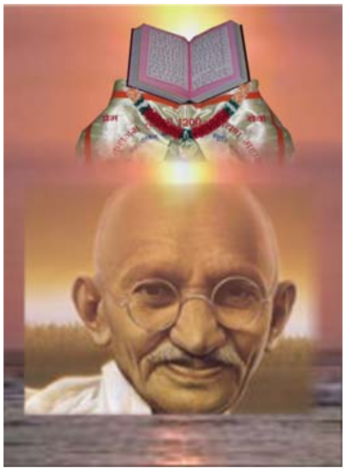

"मेरा शहर (पोरबन्दर) एक 'दरियाव शहर' है। जैसा कि आप देख सकते हैं – यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख, यहूदी और ईसाई ये सभी एक साथ फलेफूले हैं। सभी 'एक ही कुटुम्ब' की भावना से रहते हैं।"

"प्रणामी धर्म मेरा मातृधर्म है। बेशक, जन्म से हम हिन्दू हैं। हमारे प्रणामी मन्दिर में पूजारी जी एक ओर हिन्दूओं की गीता और दूसरी ओर मुस्लिमों की कुरान रख कर पढ़ते थे! वहाँ विभिन्न धर्म ग्रन्थों में निहित मौलिक एकता को प्राधान्य दिया जाता है। जिससे मैंने 'सबका परमात्मा एक है' का बोध पाया – चाहे हम उन्हें ब्रह्म कहें, खुदा कहें, या फिर **GOD** *कहें।"*

"विश्व के धर्म ग्रन्थों में भाषा एवम् सांस्कृतिक वैविध्यता अवश्य दिखती है, लेकिन 'आत्म द्रष्टि' से तो सब एक ही होते हैं। यह ज्ञान मैंने बचपन में प्रणामी धर्म से अनमोल भेंट के रूप में पाया।"– महात्मा गांधी ('गांधी' फिल्म से)

जुदे जुदे नामें गावहीं, जुदे जुदे भेख अनेक ।
जिन कोई झगड़ो आप में, धनी सबों का एक।।

श्री कुलजम सरूपः श्री प्राणनाथजी की श्री मुखवाणी

।। प्रणाम जी ।।

Shri Nijanand Foundation, Int., USA: www.nijanand.org
Phone: 732-968-6336